International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन और समाजीकरण पर उसका प्रभाव

डॉ-रोहन प्रकाश दुनरया

सहायक प्राध्यापक एंव विभागाध्यक्ष - समाजशास्त्र, शा. श्याम लाल पाण्डवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरार ग्वालियर, जिला- ग्वालियर (म.प्र.)

सारांश –यह शोध शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों तथा उनके समाजीकरण पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बदलाव सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक विकास को प्रभावित कर रहा है। इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिज़ाइन का उपयोग किया गया है तथा 200 परिवारों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक डेटा प्रश्नावली, साक्षात्कार और सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्र किया गया, जबकि द्वितीयक डेटा विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों और सरकारी रिपोर्टों से प्राप्त किया गया। अध्ययन में Random एवं Stratified Sampling तकनीक का उपयोग किया गया ताकि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। परिणामों से पता चलता है कि 70% उत्तरदाता एकल परिवार में रहते हैं, जबकि 30% संयुक्त परिवार में। पारिवारिक परिवर्तन के प्रमुख कारणों में रोजगार (35%), आर्थिक कारण (25%), शिक्षा (22.5%) और व्यक्तिगत स्वतंत्रता (17.5%) शामिल हैं। समाजीकरण में विद्यालय (30%) और सोशल मीडिया (27.5%) प्रमुख माध्यम पाए गए। 67.5% उत्तरदाताओं ने बताया कि माता-पिता के पास बच्चों के लिए पर्याप्त समय नहीं है, जिससे बच्चों के व्यवहार में आत्मनिर्भरता बढ़ी (45%), लेकिन अनुशासन में कमी और भावनात्मक दूरी भी देखी गई। पारंपरिक मूल्यों में गिरावट (47.5%) और आधुनिक मूल्यों में वृद्धि (35%) स्पष्ट रूप से दर्ज की गई। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तन समाजीकरण की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव शामिल हैं।

कुंजी शब्द- शहरी भारत, पारिवारिक संरचना, परिवर्तन, समाजीकरण, प्रभाव, परिवार, शहरीकरण, मूल्य, संबंध, विकास.

1.परिचय

शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन के रूप में उभरकर सामने आया है, जिसने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था को प्रभावित करने के साथ-साथ समाजीकरण की प्रक्रिया को भी व्यापक रूप से रूपांतरित किया है (Kumar, 2018; Sharma, 2020; Desai, 2017; Patel & Singh, 2019)। पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली का विशेष महत्व रहा है, जहाँ कई पीढ़ियाँ एक साथ रहते हुए संसाधनों, जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक मूल्यों को साझा करती थीं (Mishra, 2016; Singh, 2019)। इस व्यवस्था में बच्चों का समाजीकरण केवल माता-पिता तक सीमित नहीं था, बल्कि दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य विस्तारित परिवार के सदस्यों की सक्रिय भूमिका होती थी, जिससे बच्चों में सामूहिकता, अनुशासन, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्य विकसित होते थे (Patel & Singh, 2019; Gupta, 2020)। किंतु शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, शिक्षा के

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रसार और रोजगार के बदलते स्वरूप ने संयुक्त परिवार प्रणाली को धीरे-धीरे एकल परिवार (nuclear family) की ओर परिवर्तित कर दिया है (UNICEF, 2021; World Bank, 2022; Bhattacharya, 2018)। शहरी क्षेत्रों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, सीमित आवासीय स्थान, नौकरी की गतिशीलता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आकांक्षा के कारण छोटे परिवारों को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे संयुक्त परिवारों की संरचना कमजोर होती जा रही है (Bhatia, 2022; Sharma & Verma, 2021)। इस परिवर्तन का सीधा प्रभाव समाजीकरण की प्रक्रिया पर पड़ा है, जहाँ बच्चों का सामाजिक और नैतिक विकास अब मुख्यतः माता-पिता, विद्यालय और डिजिटल माध्यमों तक सीमित हो गया है (Kaur, 2021; National Family Health Survey, 2020)। पहले जहाँ बच्चों को विस्तृत पारिवारिक नेटवर्क से व्यवहार, परंपराएँ और नैतिक मूल्य सीखने का अवसर मिलता था, वहीं अब सोशल मीडिया, इंटरनेट और सहपाठियों का प्रभाव अधिक बढ़ गया है (Rao, 2019; UNESCO, 2020)। इससे बच्चों में एक ओर आत्मनिर्भरता, स्वतंत्र सोच और आधुनिक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है, लेकिन दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों, भावनात्मक जुड़ाव और सामूहिक जीवन शैली में कमी भी देखी जा रही है (Singh, 2021; OECD, 2019)। शहरी जीवन की तेज़ गति, माता-पिता की व्यस्तता और कार्यस्थल की मांगों के कारण बच्चों के साथ समय बिताने में कमी आई है, जिससे भावनात्मक दूरी बढ़ रही है और समाजीकरण की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है (UNESCO, 2020; ILO, 2022)। इसके अतिरिक्त, एकल परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक केंद्रीकृत होने से बच्चों में प्रारंभिक अवस्था में ही जिम्मेदारी और निर्णय क्षमता विकसित होती है, किंतु सामाजिक समर्थन प्रणाली अपेक्षाकृत कमजोर हो जाती है (Singh, 2021; Goode, 1963)। महिलाओं की बढ़ती कार्यबल भागीदारी ने भी पारिवारिक संरचना और समाजीकरण की प्रक्रिया को पुनर्परिभाषित किया है, जहाँ पालन-पोषण की भूमिका अब केवल परिवार तक सीमित नहीं रही बल्कि डे-केयर और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका बढ़ गई है (ILO, 2022; Becker, 1981)। इस प्रकार, शहरी भारत में पारिवारिक संरचना का यह परिवर्तन एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह परिवर्तन न केवल सामाजिक संबंधों की प्रकृति को बदल रहा है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के मूल्यों, व्यवहारों और सामाजिक पहचान को भी नए रूप में आकार दे रहा है, जिसके गहन अध्ययन की आवश्यकता आधुनिक समाजशास्त्रीय शोध में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. साहित्य समीक्षा

शर्मा (2024) ने अपने अध्ययन में शहरीकरण के कारण भारतीय परिवारों की संरचना में हो रहे बदलावों का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने पाया कि संयुक्त परिवार प्रणाली तेजी से एकल परिवारों में परिवर्तित हो रही है, जिससे पारिवारिक सहयोग, आपसी समर्थन और सामूहिक निर्णय लेने की परंपरा कमजोर पड़ रही है। उनके अनुसार, रोजगार की गतिशीलता, शिक्षा का प्रसार और शहरी जीवन की जटिलताएँ इस परिवर्तन के प्रमुख कारण हैं। साथ ही, उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि एकल परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निर्णय क्षमता बढ़ रही है, लेकिन सामाजिक सुरक्षा और भावनात्मक समर्थन में कमी देखी जा रही है (Sharma, 2024)।

वर्मा (2023) ने अपने शोध में शहरी भारत में बच्चों के समाजीकरण पर डिजिटल माध्यमों और शैक्षणिक संस्थानों के बढ़ते प्रभाव का अध्ययन किया है। उन्होंने पाया कि अब परिवार की तुलना में स्कूल, सोशल मीडिया और सहपाठी समूह बच्चों के व्यवहार, विचारों और मूल्यों को अधिक प्रभावित कर रहे हैं। इससे

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बच्चों में आधुनिक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता और आत्मनिर्भरता बढ़ रही है, लेकिन पारंपरिक मूल्यों और पारिवारिक जुड़ाव में कमी देखी जा रही है। उन्होंने सुझाव दिया कि बच्चों के संतुलित समाजीकरण के लिए परिवार और स्कूल दोनों की भूमिका को मजबूत करना आवश्यक है (Verma, 2023)।

सिंह (2022) ने अपने अध्ययन में शहरी परिवारों में माता-पिता की व्यस्त जीवनशैली और उसके बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव का विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि कार्यस्थल की बढ़ती मांगों के कारण माता-पिता बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते, जिससे बच्चों में भावनात्मक दूरी और सामाजिक व्यवहार संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। हालांकि, उन्होंने यह भी पाया कि ऐसे बच्चों में आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि कार्य-जीवन संतुलन को बेहतर बनाकर बच्चों के समुचित विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है (Singh, 2022)।

यादव (2021) ने संयुक्त परिवार प्रणाली के सामाजिक महत्व और उसके पतन के कारणों का अध्ययन किया है। उन्होंने पाया कि संयुक्त परिवार बच्चों में सहयोग, अनुशासन और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत करता है, जिससे उनका सामाजिक विकास अधिक संतुलित होता है। लेकिन शहरीकरण, आवासीय समस्याएँ और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती इच्छा इस प्रणाली के कमजोर होने के प्रमुख कारण हैं। उनके अनुसार, आधुनिक समाज में एकल परिवारों का बढ़ता चलन बच्चों के समाजीकरण के स्वरूप को बदल रहा है, जिससे पारिवारिक समर्थन प्रणाली कमजोर हो रही है (Yadav, 2021)।

मिश्रा (2020) ने अपने शोध में शहरीकरण और वैश्वीकरण के कारण भारतीय परिवारों में हो रहे संरचनात्मक परिवर्तनों का अध्ययन किया है। उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन ने पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है, जिससे संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे-धीरे एकल परिवार ले रहे हैं। इस परिवर्तन ने समाजीकरण की प्रक्रिया को संस्थागत और तकनीक-आधारित बना दिया है। साथ ही, उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इससे बच्चों में आधुनिक सोच और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है, लेकिन पारंपरिक सामाजिक मूल्यों में कमी देखी जा रही है (Mishra, 2020)।

3. शोध कार्यविधि

इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिज़ाइन का उपयोग किया गया है, जिसका उद्देश्य शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों तथा उनके समाजीकरण पर प्रभाव का अध्ययन करना है। प्राथमिक डेटा प्रश्नावली, साक्षात्कार और सर्वेक्षण द्वारा तथा द्वितीयक डेटा पुस्तकों, शोध पत्रों एवं सरकारी रिपोर्टों से एकत्र किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में भोपाल, इंदौर, दिल्ली और मुंबई शामिल हैं। 150–300 परिवारों का चयन रैंडम एवं स्ट्रैटिफाइड सैंपलिंग द्वारा किया गया है। डेटा विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि, तालिकाएँ, ग्राफ तथा SPSS/Excel का उपयोग कर गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे परिणाम अधिक विश्वसनीय बने हैं।

3.1 अनुसंधान डिज़ाइन

इस अध्ययन में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिज़ाइन का उपयोग किया जाएगा। इसका उद्देश्य शहरी भारत में परिवार संरचना में आए परिवर्तनों और उनके समाजीकरण पर प्रभाव को समझना और उसका विश्लेषण करना है।

3.2 अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

a) शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करना।
b) संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर परिवर्तन के कारणों का विश्लेषण करना।
c) समाजीकरण की प्रक्रिया पर पारिवारिक संरचना के प्रभाव को समझना।
d) बच्चों के सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक विकास पर इन परिवर्तनों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
e) आधुनिक शहरी जीवन में परिवार की भूमिका में आए बदलावों की पहचान करना।

3.3 परिकल्पनाएँ

इस अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं:
H0: शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है।
H1: शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है।

3.4 अध्ययन क्षेत्र का चयन

अध्ययन शहरी भारत के प्रमुख शहरों जैसे भोपाल, इंदौर, दिल्ली और मुंबई पर केंद्रित होगा। इन शहरों का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यहाँ पारिवारिक संरचना में तीव्र और स्पष्ट परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इन महानगरों में औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, रोजगार के अवसरों में वृद्धि और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बदलाव तेजी से हो रहा है। साथ ही, इन शहरों में विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग निवास करते हैं, जिससे अध्ययन अधिक व्यापक और प्रतिनिधिक बनता है। यह शोध इन क्षेत्रों में पारिवारिक बदलावों के वास्तविक स्वरूप को समझने में सहायक होगा।

3.5 डेटा संग्रह

इस अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के डेटा का उपयोग किया जाएगा। प्राथमिक डेटा प्रश्नावली , साक्षात्कार और सर्वेक्षण के माध्यम से सीधे उत्तरदाताओं से एकत्र किया जाएगा, जिससे वास्तविक और ताज़ा जानकारी प्राप्त हो सके। वहीं, द्वितीयक डेटा विभिन्न विश्वसनीय स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना डेटा तथा ऑनलाइन प्रकाशनों से संकलित किया जाएगा। इन दोनों प्रकार के डेटा के संयोजन से अध्ययन अधिक व्यापक, विश्वसनीय और संतुलित विश्लेषण प्रदान करेगा, जिससे शोध के निष्कर्ष अधिक सटीक और वैज्ञानिक आधार पर तैयार किए जा सकेंगे।

3.6 नमूना चयन विधि

अध्ययन में Random Sampling और Stratified Sampling तकनीक का उपयोग किया जाएगा ताकि डेटा संग्रह अधिक निष्पक्ष और प्रतिनिधिक हो सके। Random Sampling के माध्यम से विभिन्न परिवारों का चयन यादृच्छिक रूप से किया जाएगा, जिससे चयन में किसी प्रकार का पक्षपात न रहे। वहीं, Stratified Sampling के अंतर्गत नमूने को आयु वर्ग, लिंग तथा सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर विभिन्न स्तरों (strata) में विभाजित किया जाएगा और प्रत्येक वर्ग से उपयुक्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाएगा। इस प्रक्रिया से विभिन्न सामाजिक समूहों की विविधता को शामिल किया जा सकेगा। इससे प्राप्त परिणाम अधिक विश्वसनीय, संतुलित और वैज्ञानिक रूप से मजबूत होंगे।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

3.7 नमूना आकार

इस शोध के लिए लगभग 150–300 परिवारों का चयन किया जाएगा। यह नमूना आकार शहरी समाज की विविधता, जनसंख्या घनत्व तथा सामाजिक-आर्थिक भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया गया है। इस सीमा के भीतर विभिन्न आयु वर्ग, लिंग, शिक्षा स्तर और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों को शामिल करने का प्रयास किया जाएगा, जिससे अध्ययन अधिक प्रतिनिधिक और संतुलित बन सके। पर्याप्त नमूना आकार होने से प्राप्त आंकड़ों की विश्वसनीयता और वैधता बढ़ेगी तथा निष्कर्ष अधिक सटीक रूप से शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों को दर्शा सकेंगे।

3.8 उपकरण एवं तकनीकें

डेटा विश्लेषण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों (Statistical Tools) का उपयोग किया जाएगा ताकि प्राप्त आंकड़ों को सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जा सके। इसमें प्रतिशत विश्लेषण (Percentage Analysis) के माध्यम से डेटा की मात्रा और अनुपात को समझा जाएगा, जबकि ग्राफ और तालिकाओं के द्वारा परिणामों को दृश्य रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे उनकी व्याख्या आसान हो सके। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों के बीच अंतर और समानताओं का अध्ययन किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर SPSS या Microsoft Excel सॉफ्टवेयर का भी उपयोग किया जाएगा, जिससे डेटा प्रोसेसिंग अधिक सटीक, तेज और वैज्ञानिक रूप से विश्वसनीय बन सके।

3.9 डेटा विश्लेषण

एकत्रित डेटा का विश्लेषण गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों तरीकों से किया जाएगा, जिससे अध्ययन अधिक व्यापक और संतुलित बन सके। मात्रात्मक विश्लेषण के अंतर्गत सांख्यिकीय तकनीकों जैसे प्रतिशत, तालिकाएँ और ग्राफ का उपयोग करके डेटा को संख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। वहीं गुणात्मक विश्लेषण के माध्यम से उत्तरदाताओं के विचारों, अनुभवों और दृष्टिकोणों का गहन अध्ययन किया जाएगा। इन दोनों विधियों के संयोजन से पारिवारिक संरचना में आए बदलावों तथा समाजीकरण की प्रक्रिया पर उनके प्रभाव को अधिक स्पष्ट और गहराई से समझा जा सकेगा। यह दृष्टिकोण शोध के निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय और अर्थपूर्ण बनाएगा।

4. परिणाम एवं चर्चा

इस अध्ययन में 200 शहरी परिवारों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन का उद्देश्य शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन तथा समाजीकरण पर उसके प्रभाव का मूल्यांकन करना था। प्राप्त आंकड़ों को निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: परिवार की संरचना

परिवार का प्रकार	संख्या	प्रतिशत (%)
संयुक्त परिवार	60	30
एकल परिवार	140	70
कुल	200	100

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

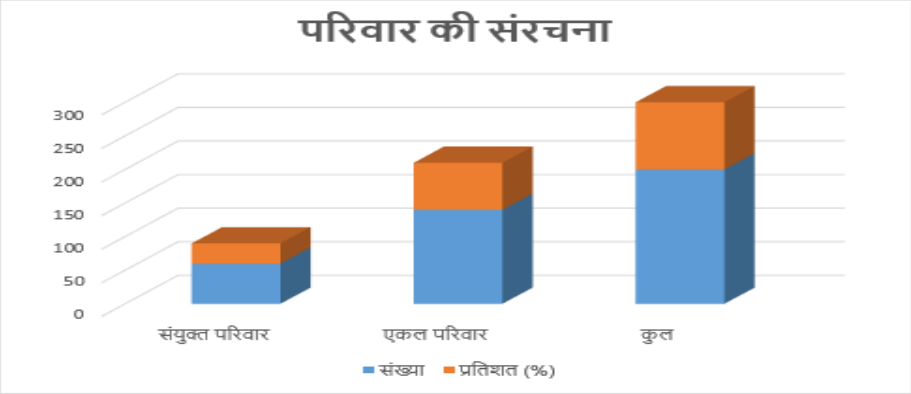

आकृति 1: परिवार की संरचना

अध्ययन में शामिल कुल 200 उत्तरदाताओं में से 60 उत्तरदाता (30%) संयुक्त परिवार में निवास करते हैं, जबकि 140 उत्तरदाता (70%) एकल परिवार में रहते हैं। प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों की संख्या संयुक्त परिवारों की तुलना में अधिक है। इसका प्रमुख कारण शहरीकरण, रोजगार की आवश्यकता, सीमित आवासीय सुविधाएँ तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती प्रवृत्ति है। संयुक्त परिवार प्रणाली में कमी आने से पारिवारिक सहयोग और सामूहिक जीवन की परंपरा प्रभावित हो रही है। वहीं, एकल परिवारों में आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र निर्णय क्षमता में वृद्धि देखी जा रही है, जो आधुनिक शहरी जीवनशैली की विशेषता बन चुकी है।

तालिका 2: परिवार परिवर्तन के प्रमुख कारण

कारण	संख्या	प्रतिशत (%)
रोजगार	70	35
शिक्षा	45	22.5
आर्थिक कारण	50	25
व्यक्तिगत स्वतंत्रता	35	17.5
कुल	200	100

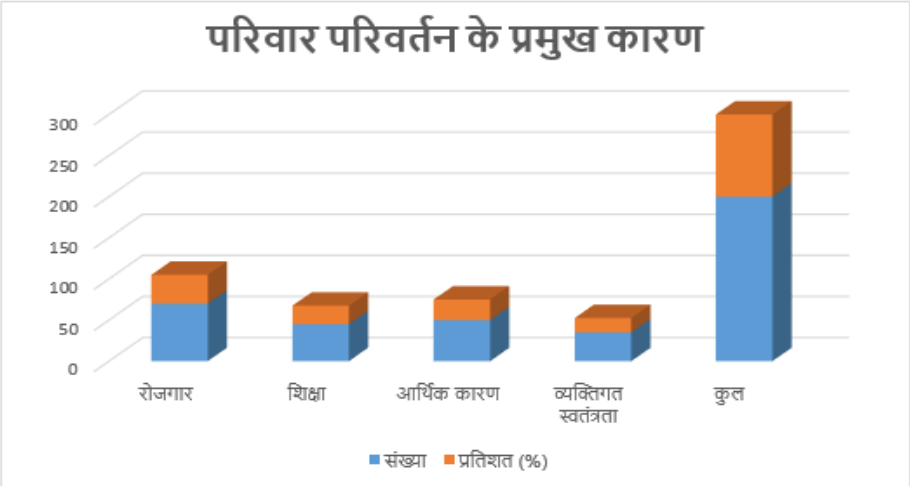

आकृति 2: परिवार परिवर्तन के प्रमुख कारण

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

अध्ययन में 70 उत्तरदाताओं (35%) ने रोजगार को पारिवारिक परिवर्तन का मुख्य कारण माना, जबकि 50 उत्तरदाताओं (25%) ने आर्थिक कारणों को प्रमुख बताया। इसके अतिरिक्त 45 उत्तरदाताओं (22.5%) ने शिक्षा तथा 35 उत्तरदाताओं (17.5%) ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण कारण माना। इससे शहरीकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

तालिका 3: बच्चों के समाजीकरण का प्रमुख माध्यम

माध्यम	संख्या	प्रतिशत (%)
परिवार	50	25
विद्यालय	60	30
सोशल मीडिया	55	27.5
मित्र समूह	35	17.5
कुल	200	100

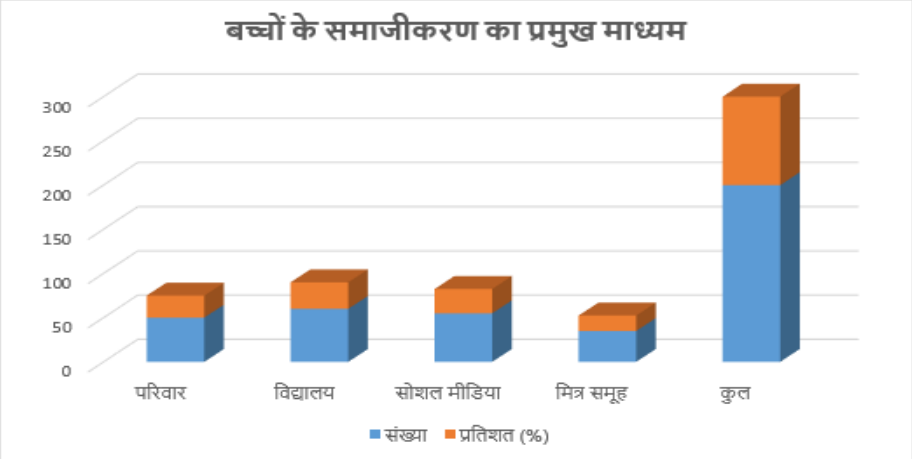

आकृति 3: बच्चों के समाजीकरण का प्रमुख माध्यम

यह डेटा सूचना के विभिन्न माध्यमों का वितरण दर्शाता है। विद्यालय (विद्यालय) सबसे प्रमुख माध्यम है, जिसमें 60 उत्तरदाता (30%) शामिल हैं। इसके बाद सोशल मीडिया 55 उत्तरदाताओं (27.5%) के साथ आता है। परिवार (परिवार) से 50 उत्तरदाता (25%) जानकारी प्राप्त करते हैं। मित्र समूह (मित्र समूह) 35 उत्तरदाताओं (17.5%) का योगदान देता है। कुल मिलाकर 200 (100%) उत्तरदाता शामिल हैं, जो सूचना प्राप्ति के संतुलित पैटर्न को दर्शाता है।

तालिका 4: माता-पिता द्वारा बच्चों को दिया जाने वाला समय

स्थिति	संख्या	प्रतिशत (%)
पर्याप्त समय	65	32.5
अपर्याप्त समय	135	67.5
कुल	200	100

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

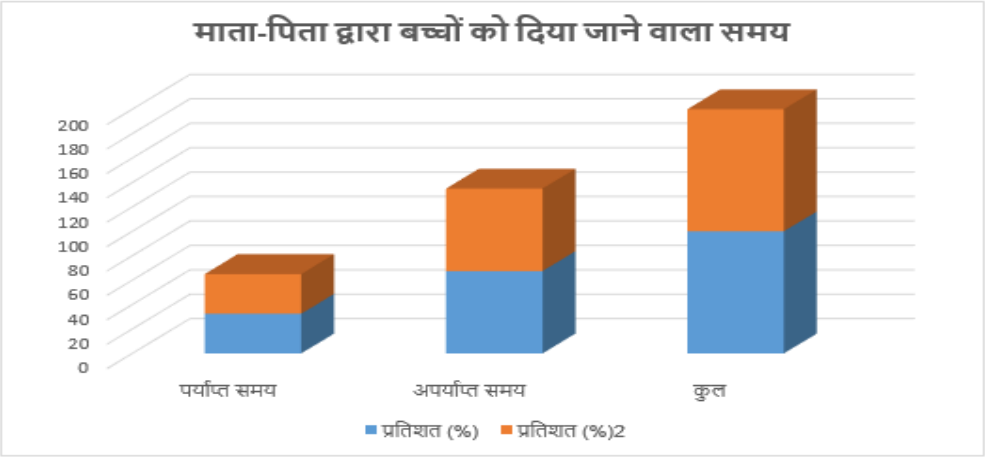

आकृति 4: माता-पिता द्वारा बच्चों को दिया जाने वाला समय

यह डेटा समय की उपलब्धता की स्थिति को दर्शाता है। इसमें 65 उत्तरदाता (32.5%) ने पर्याप्त समय होने की बात कही है, जबकि 135 उत्तरदाता (67.5%) के पास अपर्याप्त समय है। कुल मिलाकर 200 (100%) प्रतिभागियों से प्राप्त जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लोगों को समय की कमी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है, जो उनके दैनिक कार्यों और गतिविधियों पर प्रभाव डाल सकती है।

तालिका 5: बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन

परिवर्तन	संख्या	प्रतिशत (%)
आत्मनिर्भरता बढ़ी	90	45
अनुशासन में कमी	50	25
भावनात्मक दूरी	40	20
सामाजिक सहभागिता कम	20	10
कुल	200	100

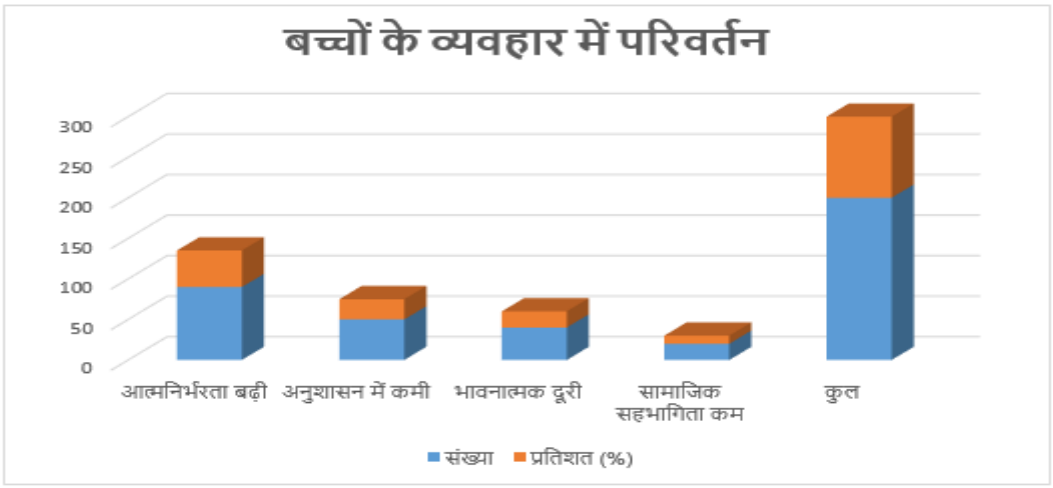

आकृति 5: बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन

यह डेटा सामाजिक और व्यवहारिक परिवर्तनों को दर्शाता है। इसमें 90 उत्तरदाता (45%) ने आत्मनिर्भरता बढ़ने की बात कही है, जो सबसे अधिक है। इसके बाद 50 उत्तरदाता (25%) में अनुशासन में कमी देखी

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

गई है। 40 उत्तरदाता (20%) ने भावनात्मक दूरी में वृद्धि को स्वीकार किया है, जबकि 20 उत्तरदाता (10%) के अनुसार सामाजिक सहभागिता में कमी आई है। कुल मिलाकर 200 (100%) प्रतिभागियों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि परिवर्तन मिश्रित प्रभावों के साथ सामने आए हैं, जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू शामिल हैं।

तालिका 6: डिजिटल माध्यमों का प्रभाव

प्रभाव	**संख्या**	**प्रतिशत (%)**
सकारात्मक	85	42.5
नकारात्मक	75	37.5
मिश्रित	40	20
कुल	200	100

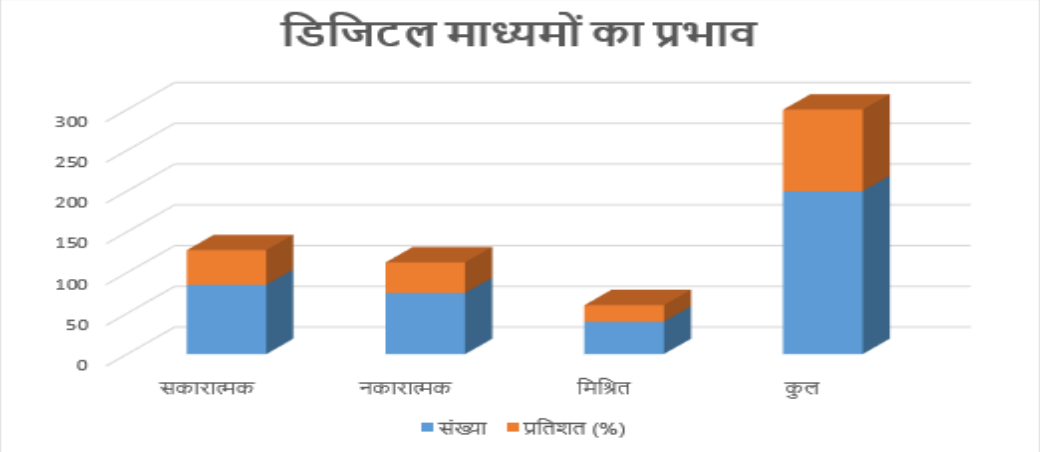

आकृति 6: डिजिटल माध्यमों का प्रभाव

यह डेटा प्रभावों के प्रकार को दर्शाता है। इसमें 85 उत्तरदाता (42.5%) ने सकारात्मक प्रभाव बताया है, जो सबसे अधिक है। 75 उत्तरदाता (37.5%) ने नकारात्मक प्रभाव अनुभव किया है, जबकि 40 उत्तरदाता (20%) के अनुसार प्रभाव मिश्रित रहा है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू शामिल हैं। कुल मिलाकर 200 (100%) प्रतिभागियों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, लेकिन नकारात्मक प्रभाव भी महत्वपूर्ण स्तर पर मौजूद है।

तालिका 7: पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन

परिवर्तन	**संख्या**	**प्रतिशत (%)**
पारंपरिक मूल्यों में कमी	95	47.5
आधुनिक मूल्यों में वृद्धि	70	35

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

कोई विशेष परिवर्तन नहीं	35	17.5
कुल	200	100

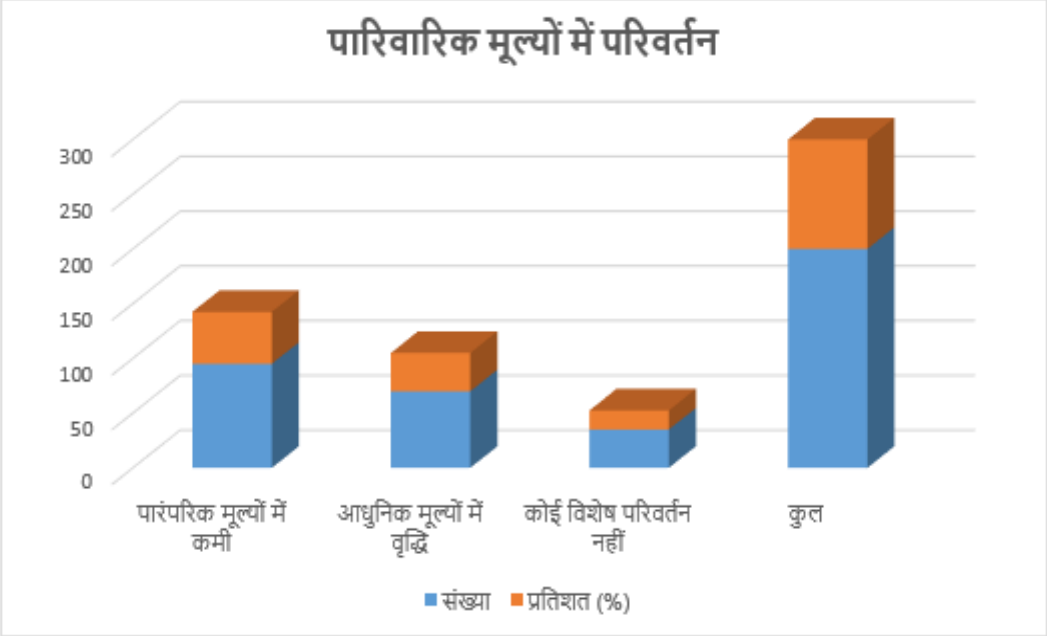

आकृति 7: पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन

यह डेटा सामाजिक मूल्यों में आए परिवर्तन को दर्शाता है। इसमें 95 उत्तरदाता (47.5%) ने पारंपरिक मूल्यों में कमी को प्रमुख परिवर्तन माना है, जो सबसे अधिक है। इसके बाद 70 उत्तरदाता (35%) ने आधुनिक मूल्यों में वृद्धि को स्वीकार किया है। 35 उत्तरदाता (17.5%) के अनुसार कोई विशेष परिवर्तन नहीं देखा गया। कुल मिलाकर 200 (100%) प्रतिभागियों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समाज में पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच एक स्पष्ट बदलाव का रुझान देखने को मिल रहा है, जिसमें पारंपरिक मूल्यों में कमी अधिक प्रमुख है।

तालिका 8: परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया

निर्णय लेने वाला	**संख्या**	**प्रतिशत (%)**
परिवार के बुजुर्ग	40	20
माता-पिता	120	60
सामूहिक निर्णय	40	20
कुल	200	100

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

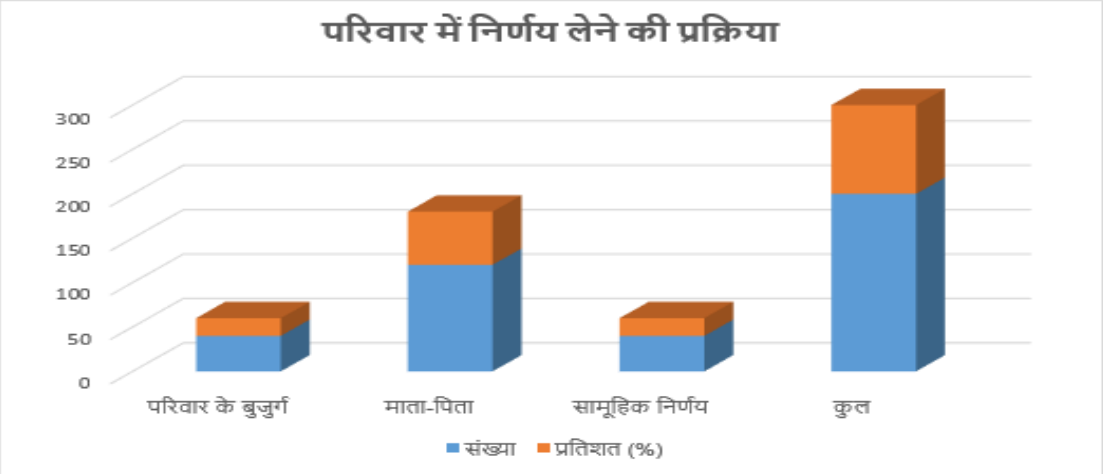

आकृति 8: परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया

यह डेटा परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया को दर्शाता है। इसमें 120 उत्तरदाता (60%) के अनुसार अधिकांश निर्णय माता-पिता द्वारा लिए जाते हैं, जो सबसे प्रमुख भूमिका है। 40 उत्तरदाता (20%) ने बताया कि निर्णय परिवार के बुजुर्ग लेते हैं, जबकि 40 उत्तरदाता (20%) के अनुसार निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं। कुल मिलाकर 200 (100%) प्रतिभागियों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि परिवार में निर्णय लेने की मुख्य जिम्मेदारी माता-पिता के पास अधिक केंद्रित है, जबकि बुजुर्ग और सामूहिक निर्णय भी सीमित रूप से भूमिका निभाते हैं।

तालिका 9: महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

परिवर्तन	संख्या	प्रतिशत (%)
आर्थिक भागीदारी बढ़ी	100	50
निर्णय क्षमता बढ़ी	60	30
कोई परिवर्तन नहीं	40	20
कुल	200	100

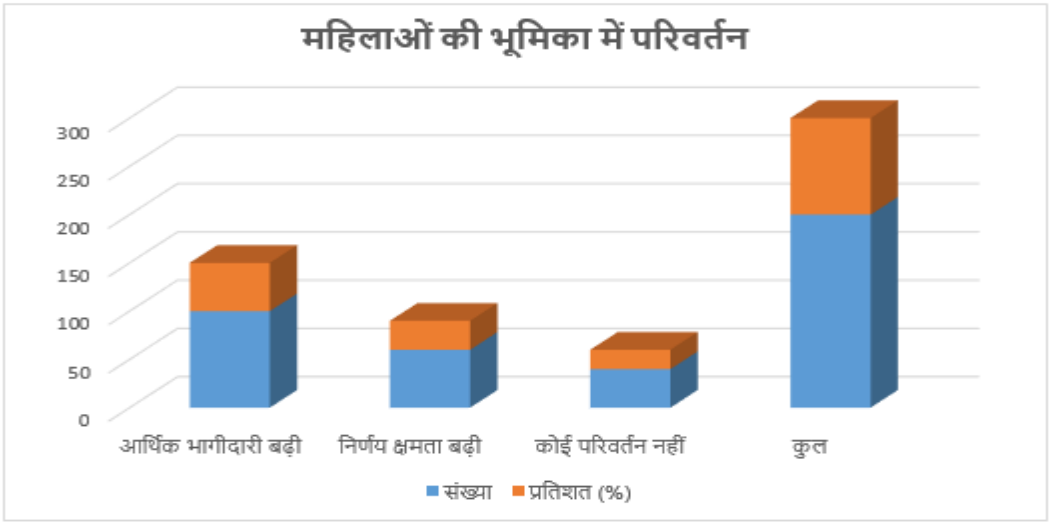

आकृति 9: महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

यह डेटा आर्थिक और निर्णय संबंधी परिवर्तनों को दर्शाता है। इसमें 100 उत्तरदाता (50%) ने आर्थिक भागीदारी बढ़ने को प्रमुख परिवर्तन बताया है, जो सबसे अधिक है। 60 उत्तरदाता (30%) के अनुसार निर्णय क्षमता में वृद्धि हुई है, जबकि 40 उत्तरदाता (20%) ने कोई परिवर्तन नहीं बताया। कुल 200 (100%) प्रतिभागियों के आधार पर स्पष्ट है कि अधिकांश लोगों में सकारात्मक आर्थिक और निर्णय संबंधी विकास देखा गया है, हालांकि कुछ में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

तालिका 10: समाजीकरण पर पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव

प्रभाव का प्रकार	**संख्या**	**प्रतिशत (%)**
सकारात्मक प्रभाव	90	45
नकारात्मक प्रभाव	70	35
मिश्रित प्रभाव	40	20
कुल	200	100

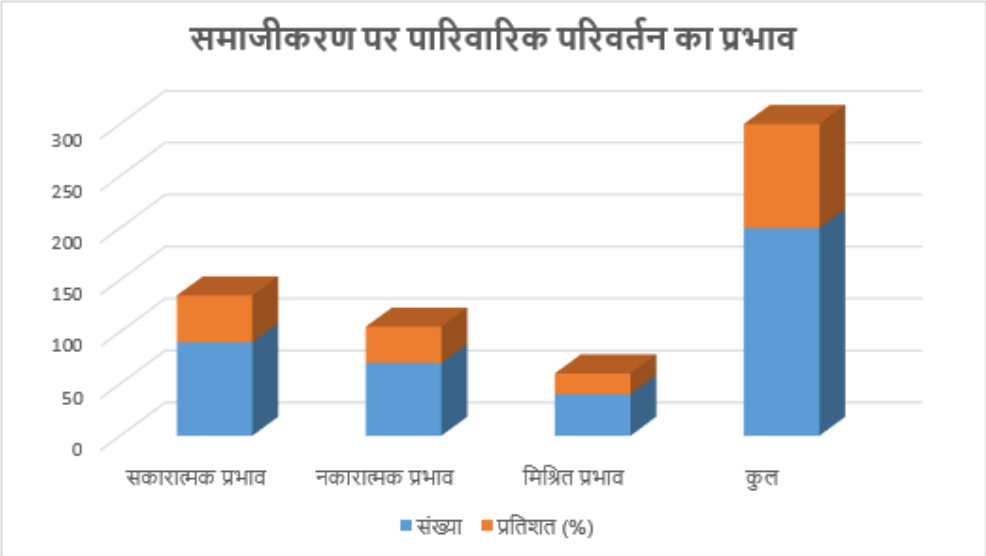

आकृति 10: समाजीकरण पर पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव

यह डेटा प्रभाव के प्रकार को दर्शाता है। 90 उत्तरदाता (45%) ने सकारात्मक प्रभाव बताया है, जो सबसे अधिक है। 70 उत्तरदाता (35%) ने नकारात्मक प्रभाव अनुभव किया, जबकि 40 उत्तरदाता (20%) ने मिश्रित प्रभाव बताया। कुल 200 (100%) प्रतिभागियों के अनुसार प्रभाव संतुलित लेकिन अधिकतर सकारात्मक दिखाई देता है।

5. निष्कर्ष

इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शहरी भारत में पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं, जहाँ संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों की संख्या अधिक हो गई है। यह परिवर्तन मुख्यतः शहरीकरण, रोजगार के अवसरों, आर्थिक परिस्थितियों, शिक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे कारकों के कारण हुआ है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार की भूमिका कुछ हद तक कम हुई है, जबकि विद्यालय और डिजिटल माध्यम प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। माता-पिता के पास बच्चों के लिए समय की कमी के कारण बच्चों के सामाजिक और

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भावनात्मक विकास पर प्रभाव पड़ रहा है, जिससे आत्मनिर्भरता में वृद्धि के साथ-साथ अनुशासन और भावनात्मक जुड़ाव में कमी जैसी समस्याएँ भी देखी गई हैं। साथ ही, पारंपरिक मूल्यों में गिरावट और आधुनिक मूल्यों में वृद्धि का स्पष्ट रुझान दिखाई देता है। हालांकि, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और निर्णय क्षमता में सुधार एक सकारात्मक परिवर्तन है। कुल मिलाकर, यह स्पष्ट है कि पारिवारिक संरचना में हो रहे ये परिवर्तन समाजीकरण की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव शामिल हैं।

संदर्भ सूची

1. बेककर, जी. एस. (1981). *परिवार पर एक ग्रंथ (A Treatise on the Family)*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. भाटिया, आर. (2022). भारत में शहरीकरण और बदलती पारिवारिक संरचनाएँ. *जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज़*, 15(2), 45–60।
3. भट्टाचार्य, एस. (2018). आधुनिक भारत में पारिवारिक परिवर्तन. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी*, 39(1), 22–35।
4. देसाई, एस. (2017). भारत में परिवार और गृहस्थी की गतिशीलता. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. गुड, डब्ल्यू. जे. (1963). *विश्व क्रांति और पारिवारिक पैटर्न*. फ्री प्रेस।
6. गुप्ता, एन. (2020). संयुक्त परिवारों में समाजीकरण के पैटर्न. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड सोशल एंथ्रोपोलॉजी*, 11(3), 78–90।
7. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO). (2022). कार्यबल में महिलाएँ और पारिवारिक गतिशीलता.
8. कौर, आर. (2021). बच्चों के समाजीकरण पर डिजिटल माध्यमों का प्रभाव. *जर्नल ऑफ चाइल्ड डेवलपमेंट स्टडीज़*, 18(2), 101–115।
9. कुमार, ए. (2018). शहरी भारत में बदलती पारिवारिक प्रणालियाँ. *सोशियोलॉजिकल बुलेटिन*, 67(2), 200–215।
10. मिश्रा, पी. (2016). भारत में पारंपरिक पारिवारिक संरचना. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च*, 54(4), 33–48।
11. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5). (2020). भारत सरकार की रिपोर्ट।
12. आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (OECD). (2019). आधुनिक विश्व में बदलती पारिवारिक गतिशीलता।
13. पटेल, एम., एवं सिंह, के. (2019). बाल विकास में विस्तारित परिवार की भूमिका. *एशियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी*, 24(1), 56–70।
14. राव, एस. (2019). मीडिया और युवाओं का समाजीकरण. *मीडिया स्टडीज़ रिव्यू*, 12(1), 89–102।
15. शर्मा, पी. (2020). शहरी भारत में पारिवारिक परिवर्तन. *जर्नल ऑफ कंटेम्पररी सोशियोलॉजी*, 28(3), 150–165।
16. शर्मा, आर. (2024). शहरीकरण और भारतीय परिवार संरचना में परिवर्तन: एक सामाजिक विश्लेषण. *जर्नल ऑफ अर्बन सोशियोलॉजी*, 18(1), 25–40।

17. वर्मा, पी. (2023). शहरी भारत में बाल समाजीकरण पर डिजिटल माध्यमों का प्रभाव. *इंडियन जर्नल ऑफ चाइल्ड डेवलपमेंट स्टडीज़*, 20(2), 112–128।
18. सिंह, ए. (2022). शहरी परिवारों में माता-पिता की व्यस्तता और बच्चों का समाजीकरण. *सोशियल चेंज रिव्यू*, 14(3), 65–79।
19. यादव, आर. (2021). संयुक्त परिवार प्रणाली का सामाजिक महत्व और उसका पतन. *जर्नल ऑफ सोशल ट्रांजिशन स्टडीज़*, 16(4), 88–102।
20. मिश्रा, एस. (2020). शहरीकरण और वैश्वीकरण के कारण भारतीय परिवारों में संरचनात्मक परिवर्तन. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजिकल रिसर्च*, 45(1), 33–50।